होम वर्क:

प्रश्न 14:- आंखो से गंगा जमुना कब बह जाती है?

उत्तर: 1. जब बाबा की यादों में खो जाते, गहरी अनुभूति होती या अतींद्रिय सुख की अनुभूति होती।

2. बांधेलिया विरह(जुदाई) की तड़प में बाबा से मिलने या सेंटर पर आने के लिये।

3. जब हम सभी ज्ञान मे आते तब शुरुआत में- क्यूंकि उन दिनों में बाबा याद के, प्राप्तियों के और बंधनो के अनेक विचित्र अनुभव कराते है।

4. जब भी उन ज्ञान के शुरुआत के दिनों को याद करते है।

5. अपने अनुभव याद करते या सुनाते समय

- ज्ञान में आने के अनुभव - बाबा की मदद के अनुभव – निमित्त आत्माओं/ ब्राह्मण परीवार से मिली मदद के अनुभव

6. जब बाबा की वा निमित्त आत्माओं से मिली पालना, उनसे हुयी प्राप्तियां, उनके उपकारों वा उन्होनें हमारे पर की हुयी महेनत को याद करते है तब वा उनका रिटर्न देने की भावना उमड़ने पर वा रिटर्न न दे पाने की फीलिंग आने पर।

7. जब हमने थोड़ा अलग टोन में या आवेश में निमित्त बडों से बात की हो और जब हमे रियालाइज हुआ हो तब।

8. मामा की किताब- 'मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती' को एक साथ हररोज पूर्ण हो जाये तब तक पढ़ने पर जब अंतिम अध्याय आता है- 'मातेश्वरीजी को शारीरिक व्याधि ने आ घेरा' वहाँ से लेकर जो रमेशभाई को डॉक्टर बीमारी का बताते है, वो बाबा को बताते है, बाबा कहते मम्मा को बता दो, फिर वो बताते है....फिर भावुक रिकॉर्ड बजती है, फिर भी मम्मा की आंखो में आँसू समा जाता है, बाहर नही निकलता..... लेकिन ये सब पढने पर हमारी आंखो से गंगा जमुना बह जाती है।

पूरी किताब एक साथ पढ़ने पर हम भी जैसे उस समय में पहुँच जाते है और भावुक हो जाते है।

9. ऐसे ही बाबा की जीवन कहानी पढ़ने से।

10. अन्य किताबों को पढ़कर जैसे

- वंदे मातरम - भाग्य विधाता - प्रभु प्रेम के परवाने - आदि रत्न

11. दादियों के या साकार समय के भाई-बहनों के अनन्य अनुभव जब उनके मुख से सुनते है या पढ़ते है तब

- उनकी तीव्र लगन को देखकर - उनके प्रभु प्रेम को देखकर - उनके ऊपर हुये सितमों को देखकर - बाबा ने उनकी जो स्थूल-सूक्ष्म पालना की वो उनकी बाबा के साथ की पर्सनल बातों को सुनकर

12. दादियों के बचपन के या युवाकाल के फोटो को देखकर और उसमें उन्होंकी त्याग-तपस्या-सेवा और क़ुरबानी को देखकर

13. विशेष दिनों पर – 18 जनवरी , 24 जून

14. ज्ञान के कई गीत साकार बाबा से या प्रभु प्रेम से संबन्धित या जब नये नये ज्ञान में आए तब जिन गीतो को सुनकर हमें नशा चड़ा था उन सब को सुनकर।

15. जब कोई बात हमे असंभव लगती हो और हम बाबा को ऐसे ही मजाक मस्ती में कह दे की ये वा ऐसा कर दो। और एक भी बार कहा हो, दूसरी बार कहा क्या सोचा भी न हो। हमे 1% भी होने की इच्छा नही है क्यूंकि असंभव समजते है। लेकिन वो बात या प्राप्ति एकसेक्ट उतनी ही होती है जो हमने मज़ाक में बाबा को कहा था। न कम, न ज्यादा। उस प्राप्ति में हमारा सामर्थ्य बहुत ही छोटा होता है।

16. अव्यक्त बापदादा से पहली मुलाक़ात या अन्य मिलन में हुये मेजिकल अव्यक्त अनुभवों को याद करते है तब।

17. अव्यक्त मिलन की तैयारी में जब हम प्रभु प्रेम में खो जाते है या द्वापर से लेकर क्या क्या नही किया उनको ढूँढने के लिये वो उन सब यादों में खो जाने से।

18. जब कोई छोटी-बड़ी बात के कारण हमारी स्थिति डिस्टर्ब्ड हो और अव्यक्त बापदादा बीच में ऐसा कुछ कह दे जो हमें लगे कि ये बाबा हमारे लिए ही कह रहे है। मुरली उस थीम पर नही चली हो, हमे ऐसे लगे कि ये वाक्य बीच में कहाँ से आ गया, आगे पीछे के वाक्यों से उस वाक्य का कोई कनेक्शन न हो। बात इतनी पर्सनल हो कि हमें लगे कि बाबा हमारे मनोभावों को जानकार हमें ही डायरेक्शन दे रहे है, सभा में और किसी को नही। ऐसा अनुभव हो कि इतनी पर्सनल केयर बाबा हमारी करते है तब।

19. मधुबन में जब 1-2 मास या लम्बा समय सेवा में रहते है और फिर वापस उस दुनिया में जाने के लिए बाबा से छुट्टी लेते समय।

20. जब बापदादा स्वयं हमे उस पहेले दिन का, पहेले अव्यक्त मिलन का आंखो देखा हाल सुनाकर इमोशनल कर रहे हो तब।

21. जब कभी हमे कोई कारण से ऐसी फीलिंग आए कि संसार में बाबा के अलावा हमारा कोई नही।

इसके अलावा और भी अलौकिक या दुनियावी कारण हो सकते है:

1. किसी समीप वालों का शरीर छुटने पर।

2. अपनी वा संबंधी की बीमारी पर। (एक बार दीदी 1 मास के लिए मधुबन में थे और किसी ने फोन पर बताया कि डॉक्टर ने दीदी को कुछ मानसिक प्रोब्लेम बताया है, सिर्फ बात सुनकर ही यहाँ सारी बहेने रोने लगी, था तो कुछ भी नही।)
3. बड़ी बहन कुछ कह दे, फोन पर कहेंगे तो फोन पर भी गंगा जमुना बहने लगेगी। फोन पर लड़ाई भी कर रहे है और गंगा जमुना भी बह रही है।
4. स्टूडेंट या कोई भी कुछ कह दे।
5. जिनसे एटेचमेंट होती है वह स्थान, व्यक्ति या सेवा से अलग होने पर।
6. एक सेंटर से दूसरे सेंटर पर ट्रान्सफर होने पर।
7. जब बहुत ज्यादा खुशी होती है तब।